दुष्यन्त का चरित्र-चित्रण (contd.):

(5) वात्सल्य भाव - contd.

(6) उत्तम-शासक - दुष्यन्त प्रजाप्रेमी होता हुआ भी उत्तमकोटि का न्यायप्रिय एवं उदारशासक है। वह दुष्टों को दण्डित एवं साधुजनों को पुरस्कृत करने में कुशल है - 'प्रजाः प्रजाः स्वा इव तन्त्रयित्वा, निषेवते श्रान्तमना विविक्तम्' (अभि० शाकु० 5/3)

पाँचवें अंक में वैतालिक न्यायप्रिय राजा की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि आप उस वृक्ष के समान है जो स्वयं धूप के कष्ट को सहन करके भी अपने आश्रितों को छाया (सुख) प्रदान करता है। यथा - 'स्वसुखनिरभिलाषः खिद्यसे लोकहेतोः प्रतिदिनमथवा ते वृत्तिरेवंविधैव। अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णं शमयति परितापं छायया संश्रितानाम्॥' (अभि० शा० 5/3)

दूसरा वैतालिक राजा का परिचय इस प्रकार देता है - 'आप कुपथगामियों को नियन्त्रित करते हैं, विवादों को शांत करते हैं, प्रजा की रक्षा के लिए तत्पर रहते हैं, बन्धुजनों में समान रूप से सम्पत्ति का विभाजन करते हैं। ये सभी उत्तम शासक के कर्त्तव्य हैं। यथा - नियमयसि विमार्ग... परिसमाप्तं बन्धु-कृत्यं जनानाम्॥' (अभि० शाकु० - 5/8)

उनके राज्य में आम व्यक्ति के अतिरिक्त वनवासी भी अपनी तपस्या का षष्ठांश इस राजा को कर के रूप में दिया करते थे। यथा - तपः षड्भागमक्षय्यं ददत्यारण्यका हि नः।' (अभि० शाकु० - 2/14)

यह राजा अपने राज्य में घोषणा करता है कि कोई भी सन्तान अथवा बन्धुहीन व्यक्ति मेरे रहते अपने को असहाय न समझे।
'येन - येन वियुज्यन्ते प्रजाः स्निग्धेन बन्धुना।
स स पापादृते तासां दुष्यन्त इति घुष्यताम्॥' (अभि० शाकु० 6/16)

(7) महाभारत के शृंगारी दुष्यन्त का परिष्कार -
कवि ने दुष्यन्त के चरित्र की उदारता दिखलाने के लिए उसे धीरोदात्त नायक के रूप में यहाँ प्रस्तुत किया है।

Scanned with CamScanner

आदिति दुष्यन्त के संबंध में कहती है – 'सम्भावनीयानुभावा अस्य आकृतिः।'

दुष्यन्त का सारथी राजा और मृग की दौड़ देखकर ठीक कहता है – 'मृगानुसारिणं साक्षात् पश्यामीव पिनाकिनम्' (अ० १।६)

प्रियंवदा महाराज दुष्यन्त की प्रभावशालिनी आकृति का वर्णन इन शब्दों में करती है – 'चतुरगम्भीराकृतिः प्रभाववानिव दृश्यते।'

⑧ आकर्षक व्यक्तित्व – राजा दुष्यन्त अत्यन्त सुन्दर है। षष्ठ अंक में धीवर से अंगूठी मिलने पर जब वह उदास हो जाता है, तो कंचुकी उसको लक्ष्य करके कहता है –

'अहो सर्वास्ववस्थासु रमणीयत्वमाकृतिविशेषाणाम्। एवमुत्सुकोऽपि प्रियदर्शनो देवः'।

⑨ लोकोत्तर रमणीय चरित्र – दुष्यन्त का हृदय अत्यन्त निर्मल वह विनम्रता एवं कोमलता की मूर्ति है। षष्ठ अंक में श शकुन्तला के वियोग में वह दग्ध है तथा उसके प्रति किया हुआ निष्ठुर व्यवहार उसके हृदय को पीड़ित कर रहा है, किन्तु सप्तम अंक में वह स्वर्ग में जाकर इन्द्र की सहायता करता है और राक्षसों पर विजय प्राप्त करता है। उसके पश्चाताप-संतप्त हृदय को शाप का रहस्य जान लेने पर ही शान्ति मिलती है।

10. आदर्श प्रेमी – दुष्यन्त एक सुसंस्कृत राजा एवं आदर्श प्रेमी है। उसका अपने रानियों के प्रति मृदु एवं शकुन्तला के प्रति ~~अलौकि~~ अलौकिक व्यवहार है। वह शकुन्तला के प्रति आकृष्ट हुआ, किन्तु उसमें भी सोच उपस्थि है। उसका सिद्धांत है – 'अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्।'

Uma Pallai,
BA II (Content)
SKt. Delhi

Contd.

Scanned with CamScanner